अध्याय
08

एक कुत्ता और एक मैना

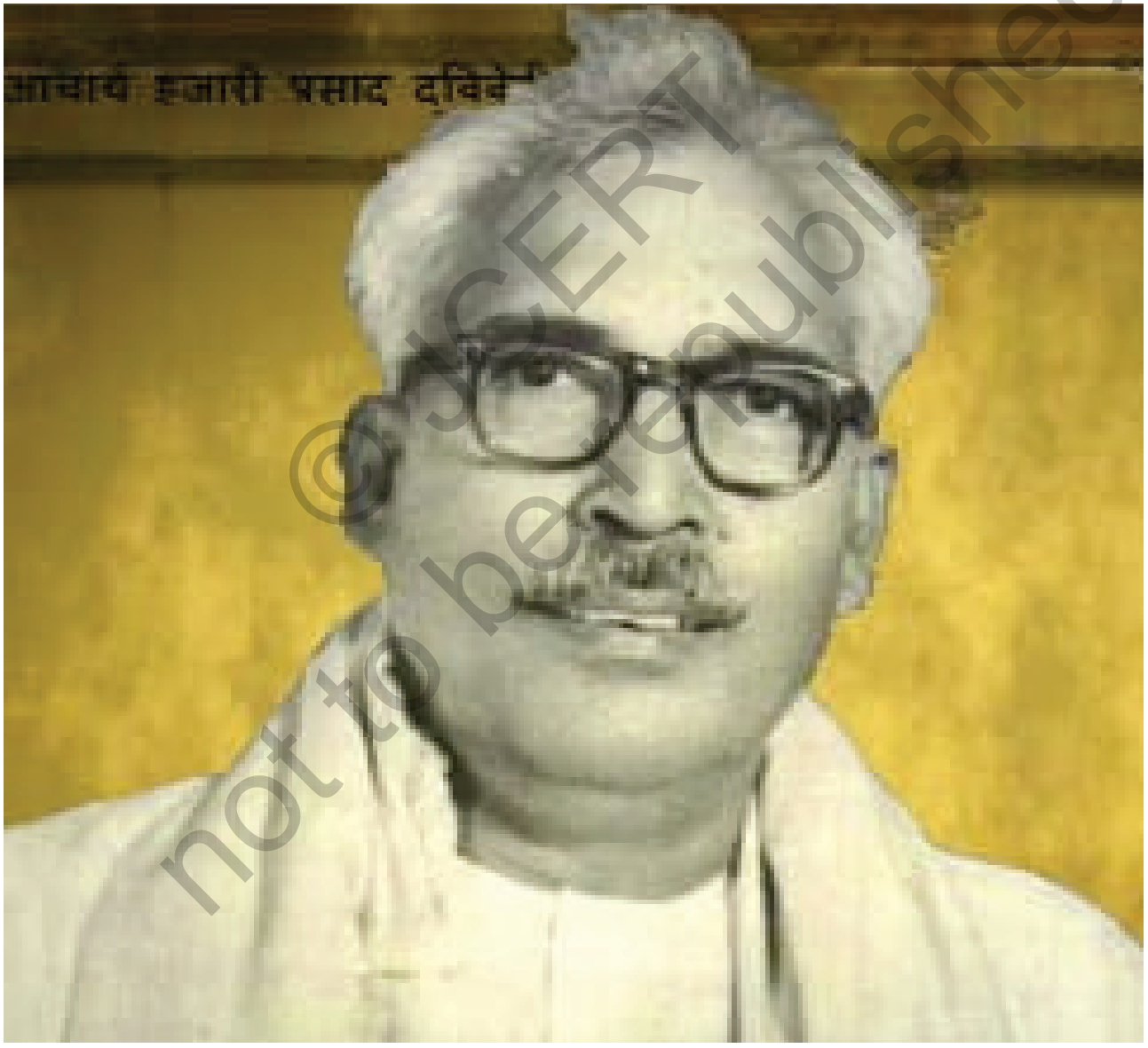

हजारी प्रसाद द्विवेदी

© NCERT not to be republished

लेखक परिचय

हजारी प्रसाद द्विवेदी

जन्म 19 अगस्त 1907 ई.
मृत्यु 19 मई 1979 ई.
जन्म— स्थान आरत दुबे का छपरा, जिला— बलिया, उत्तर प्रदेश
माता— श्रीमती ज्योतिषमति देवी, पिता श्री अनमोल द्विवेदी

* आलोक पर्व (निबंध) सन् 1973 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत
* पद्मभूषण अलंकार से सम्मानित

निबंध- अशोक के फूल, कल्पलता, विचार और वितर्क, नाखून क्यों बढ़ते हैं, कुटज, पुनश्च, प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद, आम फिर बौरा गए

आलोचना- कबीर, सूर साहित्य, हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी साहित्य का आदिकाल

इनका रचना-कर्म एक सहृदय विद्वान का रचना कर्म है जिसमें शास्त्र के ज्ञान, परंपरा के बोध और लोकजीवन के अनुभव का सृजनात्मक सामंजस्य है।

ललित निबंधकार के रुप में ख्याति ।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन एवं पंजाब विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य

© JCERT not to be republished

पाठ -परिचय

'एक कुत्ता और एक मैना' शीर्षक निबंध में पशु-पक्षियों के प्रति माननीय प्रेम के साथ-साथ पशु-पक्षियों से मिलने वाले प्रेम, भक्ति, विनोद और करुणा जैसे मानवीय भावों का विस्तार है।

लेखक ने कुत्ते और मैना के माध्यम से मानवीय और संवेदनशील जीवन का बहुत सूक्ष्म और गहनता से निरीक्षण किया है तथा हमें इन प्राणियों से प्रेम करने का संदेश दिया है।

इस निबंध मे लेखक ने पशु-पक्षियों से मिलने वाले प्रेम का वर्णन दो प्रसंगों से किया है।

एक तो वह कुत्ता है, जिसे गुरुदेव रवींद्रनाथ बिना बताए शांतिनिकेतन से श्रीनिकेतन के तिमंजिले मकान में रहने के लिए चले जाते हैं। उसमें लोहे की घुमावदार सीढ़ियां लगी थी, जिस पर चढ़ना आसान नहीं था परंतु वह कुत्ता जिसे गुरुदेव का सानिध्य चाहिए था वह वहां पहुंच जाता है। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह आनंदित हो उठा। इसी को लक्ष्य कर गुरुदेव आरोग्य पत्रिका में एक कविता लिखे थे, जिसमें उसकी स्वामी भक्ति का वर्णन है। भाव यह है कि प्रतिदिन वह भक्त कुत्ता आसन के पास तब तक बैठा रहता जब तक गुरुदेव अपने हाथों के स्पर्श से उसका संग नहीं स्वीकार कर लेते। इतने मात्र से ही उसके अंग-अंग में आनंद का प्रवाह बह उठता। दूसरी एक और घटना का जिक्र लेखक ने किया है कि जब गुरुदेव का चिताभस्म कोलकाता से आश्रम लाया गया तब भी वह कुत्ता अन्य आश्रमवासियों के साथ शांत भाव से उत्तरायण तक गया और चिताभस्म के कलश के पास कुछ देर तक बैठा रहा।

दूसरा लेखक अपना एक और अनुभव साझा करते हुए कहता है कि एक दिन सुबह मैं गुरुदेव के पास उपस्थित था। उस समय आस-पास एक लंगड़ी मैना फुदक रही थी। तभी गुरुदेव ने कहा, "देखते हो यह यूथभ्रष्ट है। यहाँ आकर रोज फुदकती है। मुझे इसकी चाल में एक करुण भाव दिखाई पड़ता है"। लेखक कहता है कि यदि उस दिन गुरुदेव नहीं कहे होते तो मुझे मैना का करुण भाव दिखाई ही नहीं दे पाता। जब गुरुदेव की बात पर लेखक ने ध्यानपूर्वक देखा तो मालूम हुआ कि सचमुच ही उसके मुख पर करुण भाव झलक रहा था। लेखक आगे बताता है कि शायद वह विधुर पति था जो, पिछली स्वयंवर सभा में युद्ध में आहत और परास्त हो गया था या फिर हो सकता है कि विधवा पत्नी हो जो, पिछले किसी आक्रमण के समय पति को खोकर अकेली रह गई।

© JCERT not to be republished

प्रश्न — अभ्यास

प्रश्न: 1. गुरुदेव ने शांतिनिकेतन को छोड़ कहीं और रहने का मन क्यों बनाया ?

उत्तर:- गुरुदेव अस्वस्थ थे। उन्हें एकांत और आराम की आवश्यकता थी। शांतिनिकेतन में दिनभर आने-जाने वालों का तांता लगा रहता था, इसलिए उन्होंने तय किया कि वे श्रीनिकेतन के अपने पुराने तीमंजिले मकान में कुछ समय शांति से निवास करेंगे।

प्रश्न 2. मूक प्राणी मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं होते।पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर:- मूक प्राणी भी संवेदनशील होते हैं। उन्हें भी स्नेह की अनुभूति होती है। पाठ में आए निम्न प्रसंगों से यह बात स्पष्ट हो जाती है-

1. जब कुत्ता गुरुदेव के स्पर्श को आँखें बंद करके अनुभव करता है, तब ऐसा लगता है मानो उसके अतृप्त मन को उस स्पर्श से तृप्ति मिल गई हो।

2. गुरुदेव की मृत्यु पर उनके चिता भस्म के कलश के सामने वह चुपचाप बैठा रहा तथा अन्य आश्रमवासियों के साथ गंभीर भाव से उत्तरायण तक गया।

प्रश्न 3. गुरुदेव द्वारा मैना को लक्ष्य करके लिखी कविता के मर्म को लेखक कब समझ पाया?

उत्तर:- लेखक को यह विश्वास नहीं था कि दूसरों पर करुणा दर्शाने वाली मैना भी कभी करुण हो सकती है। गुरुदेव रवींद्रनाथ ने उनको मैना का करुण भाव दिखाया। उन्होंने आश्रम में एक ऐसी मैना दिखाई जो अकेली थी और लँगड़ा कर चल रही थी। शायद उसी मैना को लक्ष्य बनाकर गुरुदेव ने एक कविता लिखी थी, जिसमें उस मैना के दल से अलग अकेली रहने से लेकर शिकार करने, सवेरे धूप में आहार करने का वर्णन किया है। लेखक जब कभी इस कविता को पढ़ता है तो उस मैना की करुण मूर्ति स्पष्ट रूप से सामने आ जाती है।

प्रश्न 4. प्रस्तुत पाठ एक निबंध है। निबंध गद्य साहित्य की उत्कृष्ट विधा है, जिसमें लेखक अपने भावों और विचारों को कलात्मक और लालित्यपूर्ण शैली में अभिव्यक्त करता है। इस निबंध में उपर्युक्त विशेषताएँ कहाँ झलकती हैं ? किन्हीं चार का उल्लेख करें।

उत्तर:- प्रस्तुत निबंध की उपर्युक्त विशेषताएँ अग्रलिखित प्रसंगों के माध्यम से झलकती हैं —

— जब लेखक स्वयं गुरुदेव रवींद्रनाथ के दर्शन करने के लिए आता है या फिर किसी को अपने साथ लाता है तो वहाँ पर भावों की अभिव्यक्ति दर्शनीय हो जाती है।

— मूक प्राणी के रूप में कुत्ते की आत्मीयता का लालित्यपूर्ण चित्रण किया गया।

— आश्रम में कौओं का न पाया जाना भी कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

© JCERT not to be republished

— मैना पक्षी के करूण भाव के द्वारा भी भावों और विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है।

प्रश्न 5. आशय स्पष्ट कीजिए— इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों का आशय यह है कि एक सामान्य व्यक्ति केवल ऊपरी आवरण को ही देख पाता है जबकि कवि अपने दिल की गहराई को देखने वाली आँखों से मूक-प्राणी की करुणा को पहचान और समझ लेता है। बुद्धिमान होते हुए भी मनुष्य दूसरे मनुष्य के विषय में कुछ भी नहीं जान पाता है। कवि मानव में पाए जाने वाले गुणों को भाषाहीन जंतुओं में ढूँढ लेता है। कहा भी गया है कि जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।

© JCERT not to be republished